CLASS : 12th (Sr. Secondary) **3673/3623**

Series : SS-M/2018 ***SET : A, B, C & D***

Total No. of Printed Pages : **16**

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

MUSIC HINDUSTANI (Vocal)

(Academic/Open)

(Only for Fresh/Re-appear Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) *Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.*

(ii) *Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.*

(iii) *Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.*

(iv) *Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.*

(v) *Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.*

(vi) A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.

(vii) If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.

(viii) If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.

(ix) Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.

(x) Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.

(xi) Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.

महत्त्वपूर्ण निर्देश :

(i) अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।

(ii) शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।

(iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।

(iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।

(v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।

(vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/ Guidelines दी जा रही है, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

SET – A

1. (iii) चार 1

2. (ii) अलंकार 1

3. (iv) थाट-राग पद्धति 1

4. (ii) 4 से 7 बजे 1

5. (i) बिलावल 1

6. दिन के तीसरे प्रहर में 1

7. कल्याण थाट का 1

8. राग भैरव 1

9. सन् 1886 में आगरा में 1

10. किराना घराने से 1

11. **ग्राम** – निश्चित श्रुति अन्तरों पर स्थापित सात स्वरों के समूह को ग्राम कहते हैं।

प्रकार – ग्राम के तीन प्रकार हैं :

(i) षडज ग्राम

(ii) मध्यम ग्राम

(iii) गंधार ग्राम 1½

12. **अलंकार**

परिभाषा – नियमित वर्ण समूह को अलंकार कहते हैं।

कोई एक अलंकार लिखने पर पूरा एक अंक दें। ½ +1 = 1½

13. रे ध कोमल स्वर वाले राग संधिप्रकाश राग कहते हैं। ये राग दिन और रात की संधि बेला में गाये जाते हैं। यह समय दिन में दो बार आता है। प्रातः सूर्योदय के समय और सायं सूर्यास्त के समय।

इस समय जो राग गाये बजाये जाते है; उन्हें संधिप्रकाश राग कहा जाता है। जैसे - भैरव, भैरवी, पूरिया मारवा आदि। इन रागों का गायन समय सुबह व शाम 4 से 7 बजे तक होता है। 1½

14. संधिप्रकाश राग :

(i) प्रातः कालीन एवं सांय कालीन संधिप्रकाश प्रातः कालीन कोमल रे ध के साथ शुद्ध मध्यम और सायंकालीन संधिप्रकाश में रे ध कोमल के साथ तीव्र मध्यम।

(ii) **शुद्ध रे ध वाले राग :**
यह राग प्रातः और सायं **7** से **10** बजे तक गाये बजाये जाते है। प्रातः काल रे ध शुद्ध के साथ शुद्ध तथा सायंकाल में रे ध शुद्ध के साथ तीव्र मध्यम आता है।

(iii) **ग नि कोमल वाले राग :**
ऐसे राग **10** से **4** बजे तक गाये-बजाये जाते है। इन रागों में रे ध शुद्ध या कोमल ग स्वर अवश्य कोमल होना चाहिए। प्रातः कालीन इन रागों में आसावरी, जौनपुरी, गांधारी, तोड़ी और रात्री में यमन गाने के पश्चात बागेश्वरी, जयजयवन्ती, मालकैंस आदि रागों का समय होता है।

15. राग भैरव में रे ध कोमल हैं। ½
आरोह - स रे ग, म, प, ध, नी सं ½
अवरोह - सं नी ध प, म, ग, रे, स ½

16. कक्षा में हुये कार्यानुसार स्वरलिपि लिखने पर पूरे अंक दें। 1½

17. झपताल 10 मात्राओं की तबला अंग के बंधे बोलों की ताल है। इसमें 2-3 – 2-3 मात्राओं के चार विभाग हैं। सम पर पहली वाली पड़ती है। तीसरी और आठवीं मात्रा पर क्रमशः दूसरी तीसरी ताली पड़ती है। छठीं मात्रा पर खाली है। इस ताल की संगति

ख्याल गायकी के साथ की जाती है। इसमें कुछ ध्रुपद भी प्राप्त होते हैं जिन्हें दादरा कहते हैं। ½

ठेका :

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
×		2			0		3		

1 + 1 = 2

18. किसी भी राग के छोटे ख्याल की स्थाई की स्वरलिपि सही चिह्नों के साथ लिखी जाये तो पूरे अंक दीजिए। 2

19. राग देस - थाट - खमाज स्वर - दोनों नी शेष स्वर शुद्ध
वर्जित स्वर - कोई नहीं, जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण
वादी-संवादी - रे - प, अंग - पूर्वांगवादी
न्यास के स्वर - स रे प, समय - रात्रि का दूसरा प्रहर
प्रकृति - चंचल
आरोह - स, रे, म प, नी सं
अवरोह - स नी ध प, म ग, रे ग स
पकड़ - रे, म प, नी ध प, प ध प म, ग रे ग स।
उपरोक्त विवरण देने पर पूरे अंक दीजिए। 2

20. पं० भातखण्डे जी की संगीत शिक्षा, संगीत यात्रा, संगीत सम्मेलन, स्वरलिपि पद्धति का निर्माण, थाट-राग पद्धति का प्रचार, पुस्तकों की रचना बंदिशों की रचना, विद्यालयों का निर्माण, प्राचीन बंदिशों का संरक्षण, शिष्य परम्परा आदि का वर्णन करने पर पूरे अंक दीजिए।

OR

संगीत की उत्पत्ति का संबंध वेदों देवताओं आदि से जोड़ते हुये वैदिक काल में संगीत की स्थिति अर्थात् वैदिक काल में वेदों में गायन, वादन, नृत्य आदि का वर्णन करने पर पूरे अंक दीजिए। 2½

21. दोनों संगीतज्ञों में से किसी एक संगीतज्ञ के जन्म एवं शिक्षा, गायकी, संगीत यात्राएँ, संगीत के प्रचार-प्रसार में किये गये कार्य, रचनाएँ, शिष्य परम्परा निधन आदि विषयों पर लिखने के लिये पूरे अंक दीजिए। 2½

SET – B

1. (iii) तीन 1

2. (ii) नीचे से ऊपर 1

3. (iv) 18 1

4. (iv) ग नी कोमल स्वर वाले 1

5. (i) काफी 1

6. राग भैरव दिन और रात की संधि बेला में अर्थात 4 से 7 बजे के बीच गाया जाता है। 1

7. सोरठ 1

8. किसी भी राग का वह विशेष स्वर समूह जिससे राग की पहचान होती है, पकड़ कहलाती है। 1

9. पाकिस्तान 1

10. ग्वालियर घराने का 1

11. ग्रामिक स्वरों का क्रमिक आरोह-अवरोह करना मूर्च्छना कहलाता है। मूर्च्छना के तीन प्रकार हैं :

(i) षडज ग्रामिक मूर्च्छना

(ii) मध्यम ग्रामिक मूर्च्छना

(iii) गंधार ग्रामिक मूर्च्छना 1½

12. **गमक** – स्वरों का ऐसा कम्पन जो चित्त को प्रसन्न करे, गमक कहलाता है।

गमक के प्रकार – शारंगदेव ने गमक के 15 प्रकार माने है। 1½

13. मध्यम स्वर को अध्वदर्शक स्वर कहते हैं। जिन रागों में मध्यम शुद्ध लगता है वे दिन में गाये जाते हैं और जिन रागों में तीव्र मध्यम लगता है वे रात्रि में गाये जाते हैं। 1½

14. मौसमी राग निश्चित मौसम में कभी भी गाये-बजाये जा सकते हैं जैसे बसंत राग बसंत ऋतु में तथा मियाँ मल्हार वर्षा ऋतु में। 1½

15. भीमपलासी, बिहाग, देस, केदार में से किसी एक राग का नाम तथा आरोह-अवरोह लिखने पर पूरे अंक दीजिए। 1½

16. राग - केदार, वादी संवादी - म - स 1½

17. मात्राएँ - 14, विभाग - 4 (5, 2, 3, 4)

ताली - 1, 6, 11 मात्राओं पर खाली - 8वीं मात्रा पर

संगति - धमार गायिकी के साथ

ठेका :

1 2 3 4 5	6 7	8 9 10	11 12 13 14
क धि ट धि ट	धा ऽ	ग ति ट	ति ट ता ऽ
×	2	0	3

1 + 1 = 2

18. किसी भी राग में कक्षा में हुये कार्यानुसार छोटे ख्याल की स्थाई की स्वरलिपि पूर्ण चिह्नों सहित लिखने पर पूरे अंक दीजिए। 2

19. भैरव

थाट - भैरव, स्वर - रे ध कोमल, शेष स्वर शुद्ध
वर्जित स्वर - कोई नहीं, जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण
वादी-संवादी - ध रे, अंग - उत्तरांगवादी
गायन समय - प्रातःकाल समप्राकृतिक राग - कलिगड़ा
प्रकृति - गंभीर, न्यास के स्वर - स रे प ध
आरोह - स, रे, ग, म, प, ध, नी सं
अवरोह - सं नी ध, प, म ग रे, स
पकड़ - ग म ध ऽ ध ऽ प ग म रे ऽ रे ऽ स 2

20. संगीत रत्नाकर - पं० शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर 13वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लिखा गया। उत्तरी व दक्षिणी दोनों संगीत पद्धतियाँ इसे अपना आधार ग्रंथ मानती हैं। इसमें नाद, श्रुति स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, जाति आदि का विवेचन भली-भांति किया गया है। इसमें गायन-वादन, नृत्य तीनों का विवरण है। सात अध्याय होने के कारण इसे सप्ताध्यायी भी कहा जाता है। इसमें 264 रागों का वर्णन है। आपने अपने रागों का संबंध जातियों से जोड़ने का प्रयत्न किया है। मूर्च्छनाओं की मध्य सप्तक में स्थापना, विकृत स्वरों की कल्पना, मध्यम ग्राम का लोप आदि रत्नाकर की मौलिकता को स्पष्ट करती है।

उपरोक्त विवरण का विस्तार करने पर पूरे अंक दीजिए। 2½

या

अकबर के काल में संगीत की स्थिति, संगीतज्ञों का सम्मान, प्रमुख संगीतज्ञों का परिचय, गायन-वादन, नृत्य की स्थिति आदि का वर्णन करने पर पूरे अंक दीजिए।

21. दोनों संगीतकारों में से किसी एक की जीवन यात्रा में जन्म एवं शिक्षा, संगीत संबंधी कार्यक्रम तथा गायकी, संगीत के प्रति देन, शिष्य परम्परा, निधन आदि विषयों का वर्णन करने पर पूरे अंक दीजिए। 2½

SET – C

1. (iii) तान 1

2. (ii) गमक 1

3. (iii) 30 1

4. (i) दिन के बारह बजे से रात्रि के 12 बजे तक 1

5. (iii) म॑ प ध प 1

6. उत्तरांगवादी 1

7. काफी थाट का 1

8. राग बिहाग 1

9. गुलाम अब्बास खाँ 1

10. पंजाबी अंग की 1

11. **लय** - गायन-वादन की क्रिया में जो समय लगता है उसकी एक समान चाल को लय कहते हैं।
प्रकार - लय के तीन प्रकार हैं
(i) विलंबित लय
(ii) मध्य लय
(iii) द्रुत लय 1½

12. खटका और मुर्की में अंतर है।
खटका - जब किसी स्वर के अगले या पिछले स्वर को झटके के रूप में प्रयोग किया जाता है तब ऐसी क्रिया खटका कहलाती है।

मुर्की - जब गायक शीघ्रता से निकट के 4-5 स्वरों को गा या बजा देता हैं तो उसे मुर्की कहते हैं। 1½

13. रागों के समय सिद्धान्त के नियम :

(i) संधि प्रकाश व उसके बाद गाये जाने वाले रागों का नियम।

(ii) पूर्वांगवादी एवं उत्तरांगवादी राग का नियम।

(iii) अध्वदर्शक स्वर का महत्त्व। 1½

14. (i) रागों में स्वरों की संख्या सीमित है तो प्रभाव में विशेष अन्तर कैसे पड़ सकता है ?

(ii) राग का प्रभाव कलाकार की क्षमता पर निर्भर करता है।

(iii) यह परम्परागत संस्कारों का परिणाम है चतुर दरबारी संगीतज्ञों की देन है।

(iv) रागों के स्वरूप में काफी परिवर्तन आ चुका है। उपरोक्त विषयों की संक्षिप्त चर्चा करने पर पूरे अंक दीजिए। विपरीत मत देने पर भी तार्किक उत्तर के पूरे अंक दीजिए। 1½

15. राग - भैरव

आरोह - स रे ग, म प, ध, नी सं

अवरोह - सं नी ध, प, म ग रे, स। 1½

16. कल्याण थाट से उत्पन्न राग है - केदार

गायन समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

पकड़ - स म म प, मं प ध प, म रे स 1½

17. मात्राएँ - 7 विभाग - 3 (3-2-2)

ताली - 4, 6, पर, खाली - सम पर विशेष - एक मात्र ताल है जिसके सम पर खाली है।

अंग - तबला अंग की बंधे बोलों की ताल

संगति - ख्याल, सुगम संगीत, मसीतखानी गतें। 1 + 1 = 2

ठेका :

1 2 3	4 5	6 7
ती ती ना	धी ना	धी ना
×/०	1	2

18. राग - भैरव

थाट - भैरव, स्वर - रे ध कोमल शेष स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - कोई नहीं, जाति - सम्पूर्ण - सम्पूर्ण

वादी संवादी - ध रे, अंग - उत्तरांगवादी

गायन समय - प्रातःकाल

प्रकृति - गंभीर, सम प्राकृतिक राग - कलिंगड़ा

आरोह - स रे ग, म प, ध, नी सं

अवरोह - सं नी ध, प, म ग, रे, स

पकड़ - ग म ध ऽ ध ऽ प, ग म रे ऽ रे स 2

19. पाठ्यक्रम के किसी भी राग में कक्षा में हुये कार्यानुसार छोटे ख्याल के स्थाई की स्वरलिपि चिह्नों सहित लिखने पर पूरे अंक दीजिए। 2

20. **संगीत पारिजात** - सन् 1650 ई० में पं० अहोबल ने हिन्दुस्तानी संगीत का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ संगीत पारिजात लिखा। इस ग्रंथ में पाँच अध्याय हैं। आपने 22 श्रुतियाँ सात शुद्ध स्वर तथा 22 विकृत स्वरों का उल्लेख किया है। इस ग्रंथ में शुद्ध थाट आधुनिक काफी थाट के समान है। आपने अपने ग्रंथ में श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, वर्ण, अलंकार आदि की जो परिभाषाएँ दी हैं वे आज भी उपयोगी है। इतिहास में पहली बार आपने ही वीणा के तार की लंबाई पर भिन्न-भिन्न नाप से शुद्ध विकृत स्वरों की स्थापना की है। यह ग्रंथ अत्यन्त उपयोगी है।

OR

संगीत की उत्पत्ति का देवी-देवताओं पक्षियों आदि से जोड़ते हुये गुप्त काल का वर्णन करें जो प्राचीन काल में संगीत का स्वर्ण युग माना जाता है। उस समय गायन-वादन नृत्य वाद्य आदि का वर्णन करने पर पूरे अंक दें। 2½

21. निम्न संगीतकारों में से किसी एक संगीतकार का जन्म, शिक्षा, गायकी, संगीत कार्यक्रम, संगीत जगत को महत्त्वपूर्ण योगदान, शिष्य परम्परा, निधन आदि का विवरण देने पर पूरे अंक दीजिए।

श्री कृष्ण राव शंकर पंडित

अथवा

उ० अब्दुल करीम खाँ 2½

SET – D

1. (iii) ताल 1

2. (i) 4-3-2-4-4-3-2 1

3. (iii) 10 1

4. (iv) रात्रि में 1

5. (ii) <u>ध</u> <u>रे</u> 1

6. रे ध 1

7. हमीर 1

8. राग देस 1

9. शंकर गांधर्व महाविद्यालय 1

10. आगंरा घराने से 1

11. **ताल** - गायन, वादन, नृत्य की क्रिया में जो समय लगता है, उसे नापने के पैमाने को ताल कहते हैं।

महत्त्व - (i) ताल से ही गायन-वादन नृत्य से विशेष आनंद की प्राप्ति होती है।

(ii) ताल से ही गायन-वादन में व्यवस्था आती है। 1½

12. ग्रामिक स्वरों का क्रमिक आरोह-अवरोह मूर्च्छना कहलाता है। मूर्च्छना के तीन प्रकार हैं।

प्रत्येक प्रकार से 7-7 मूर्च्छनाएँ उत्पन्न होती हैं अतः कुल 21 मूर्च्छनाएँ मानी जा सकती है। 1½

13. रागों का समय सिद्धान्त उचित मानने वाले रागों का संबंध रस भाव से तथा मनुष्य के मन की स्थिति से जोड़ते हैं। अनुचित मानने वाले इसे कतिपय दरबारी संगीतज्ञों के दिमाग की उपज मानते है तथा आधुनिक युग में इसकी सार्थकता पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं दोनों में से किसी भी पक्ष में तर्कसंगत विचार व्यक्त करने पर पूरे अंक दीजिए। 1½

14. रे ध शुद्ध स्वरों वाले राग 7 से 10 बजे के बीच गाये-बजाये जाते हैं यह समय दिन में दो बार आता है। प्रातःकालीन रागों में बिलावल रात्रिकालीन में केदार, कल्याण आदि का उदाहरण दिया जा सकता है। 1½

15. राग केदार :

आरोह - स म म प, ध प, नि ध सं।

अवरोह - सं नी ध प, मं॑ प ध प, म रे स।

पकड़ - स म म प, मं॑ प ध प, म रे स। 1½

16. राग भीमपलासी :

थाट - काफी, अंग पूर्वांगवादी, गायन समय - दिन का तीसरा प्रहर। 1½

17. तिलवाड़ा ताल :

मात्राएँ - 16, विभाग - 4-4-4-4

ताली - 1, 5, 13 खाली - 9

संगति - विलंबित ख्याल, अंग - तबला अंग की बंधे बोलों की ताल।

लय - विलंबित

ठेका - (एकगुन) 2

1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
धा तिरकिट धिं धिं	धा धा तिं तिं	ता तिरकिट धिं धिं	धा धा धिं धिं
×	2	0	3

18. पाठ्यक्रम में से किसी भी एक राग के द्रुत ख्याल की स्थाई की स्वरलिपि चिह्नों सहित लिखने पर पूरे अंक दीजिए। 2

19. राग बिहाग :

थाट - बिलावल स्वर - सभी शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में रे ध, जाति - औडव-सम्पूर्ण

वादी संवादी - ग - नी, अंग - पूर्वांगवादी

गायन समय - रात्रि का प्रथम प्रहर,

प्रकृति - गंभीर, समप्राकृतिक राग - शंकरा

विशेष - तीव्र म का पंचम के साथ अल्प प्रयोग

आरोह - नी स ग म प, नी सं

अवरोह - सं नी, ध प, म ग, रे स

पकड़ - नी स ग म प, मं प ग म ग, रे स 2

20. दो महान संगीत उद्धारक बीसवीं शताब्दी के - पं० विष्णु नारायण भातखण्डे तथा पं० विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर।

भातखण्डे जी का संगीत के प्रति योगदान जैसे - थाट राग पद्धति का प्रचार, स्वरलिपि पद्धति का निर्माण, संगीत सम्मेलन, संगीत विद्यालयों की स्थापना, परम्परागत गायकी का संरक्षण, पुस्तक लेखन, रचनाएँ शिष्य परम्परा आदि का वर्णन करने पर पूरे अंक दीजिए। 2½

अथवा

अकबर का काल मध्य काल का स्वर्ण युग या उनके दरबार में सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञों का होना, उस समय में श्रेष्ठ ग्रंथों का लिखा जाना, संगीतज्ञों का सम्मान, उच्चकोटि के रचनाकारों का होना, आदि विषय वस्तु लिखने पर पूरे अंक दीजिए।

21. निम्न संगीतकारों में से किसी एक के जीवन एवं शिक्षा, गायकी, संगीत यात्रा, संगीत कार्यक्रम, संगीत जगत को योगदान शिष्य परम्परा, पुरस्कार ***अथवा*** सम्मान, निधन आदि विषयों पर लिखने पर पूरे अंक दीजिए। 2½